दर्शन शब्द के स्वरूप
B.A I (Sub)

भारतीय दर्शन दार्शनिक चिन्तन की वह प्रक्रिया है जो भारत में लगातार क्रम से अब तीन हजार वर्षों से विकसित हुई है। वेद में भारतीय दर्शन की मूल प्रवृत्ति स्पष्ट और सजग रूप से मिलती है

दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति दृश धातु ल्युट् (अन) प्रत्यय लगाने से हुई है जिसका अर्थ होता है जिसके द्वारा देखा जाये अर्थात् सत्ता के वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयास। दर्शन शब्द को अंग्रेजी में (Philosophy) कहते हैं जो ग्रीक शब्द फिलास एवं फिलो से निकला है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ज्ञान के प्रति अनुराग अथवा विद्या-प्रेम

भारतीय दर्शन का सृजन दुःखों से मुक्ति पाने को हुआ है। यहाँ ज्ञान की प्राप्ति ज्ञान के लिए न होकर मोक्षानुभूति के लिए हुई है। दर्शन का कार्य होता है समस्त दुःखों का अन्त करके परम लक्ष्य पाने में सहायता। भारतीय दर्शन को मोक्ष दर्शन भी कहा जाता है। मैक्स मूलर के अनुसार "भारत में दर्शन अध्ययन किसी ज्ञान की प्राप्ति हेतु नहीं जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किया जाता है"

दर्शन एवं धर्म का सम्बन्ध

का मूल अंत हो जाता का साक्षात अनुभव करने से होता है और अनुभव श्रवण मनन एवं निदिध्यासन से होता है।

भारतीय दर्शन को दो सम्प्रदायों में बाँटा जाता है (1) आस्तिक (2) नास्तिक। भारतीय विचारधारा में आस्तिक उसे कहा जाता है जो वेद की प्रामाणिकता में विश्वास करता है और नास्तिक उसे कहा जाता है जो वेद को प्रामाणिक नहीं मानता है। भारतीय दर्शन में छः दर्शन आस्तिक हैं। वे हैं- (1) न्याय (2) वैशेषिक (3) सांख्य (4) योग (5) मीमांसा (6) वेदान्त। इन्हें षड् दर्शन के नाम से जाना जाता है और नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत - (1) चार्वाक (2) बौद्ध (3) जैन को रखा गया।

भारत के सभी दार्शनिकों (चार्वाक के छोड़कर) संसार को दुःखमय मानते हैं तथा दुःख से छुटकारा पाने के लिए मार्गों को बतलाते हैं। दुःख तीन प्रकार के होते हैं- आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक। दर्शन में इस बात पर बल दिया जाता है कि मनुष्य अपने दुःखों का निरोध कर सकता है। भारत में दुःख निरोध को मोक्ष कहा जाता है। मोक्षावस्था में दुःखों का पूर्ण अभाव हो जाता है। सांख्य एवं शंकर के अनुसार मानव अपने ज्ञान के द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकता है। अर्थात् वस्तु के यथार्थ ज्ञान से ही मोक्ष